एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषि शिक्षा में नई शिक्षा नीति: कृषि में उत्थान कुंजी

(सुरभि जांगिड़[1], *कमलेश गुर्जर[2], सौरभ पांडे[3], शुभम मिश्रा[4] एवं पूजा राठौड़[5])

[1]विस्तार शिक्षा विभाग, एमपीयूएटी, उदयपुर, राजस्थान

[2]विस्तार शिक्षा विभाग, एयू, जोधपुर, राजस्थान

[3]विस्तार शिक्षा और संचार विभाग, एएयू, आनंद, गुजरात

[4]विस्तार शिक्षा प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा

[5]बागवानी विभाग, एमपीयूएटी, उदयपुर, राजस्थान

*संवादी लेखक का ईमेल पता: kamleshgurjar0962@gmail.com

भारत में कृषि अनुसंधान और शिक्षा 20वीं शताब्दी की शुरुआत में इंपीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईएआरआई) और कानपुर, नागपुर, कोयंबटूर, पुणे और सबौर में कृषि महाविद्यालयों की स्थापना के साथ शुरू हुई। भारत की राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान और शिक्षा प्रणाली (NARES) दुनिया की सबसे बड़ी प्रणालियों में से एक है। इस प्रणाली की अनूठी कार्यप्रणाली शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार घटकों के बीच घनिष्ठ संबंध है, जिसने स्वतंत्रता के बाद कृषि के तेजी से विकास में बहुत योगदान दिया है। कृषि शिक्षा, इसके प्रमुख घटकों में से एक, ने हाल के दशकों के दौरान जबरदस्त विस्तार दिखाया है।

भारत की नई शिक्षा नीति- 2020 (NEP-2020) में उच्च कृषि शिक्षा प्रणाली सहित भारत की शिक्षा प्रणाली में कई बदलावों का प्रस्ताव दिया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) द्वारा विनियमित और समर्थित देश की कृषि शिक्षा प्रणाली में एनईपी-2020 के कार्यान्वयन के लिए एक रोड मैप में संस्थागत संरचना को बहु-विषयक अनुसंधान-गहन उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) के नए रूप में बदलना शामिल है। कृषि पर ध्यान जारी रखते हुए पाठ्यक्रम, डिग्री/ डिप्लोमा/ प्रमाणपत्र प्रणाली की शैक्षणिक संरचना, क्रेडिट बैंकिंग प्रणाली, एचईआई, विश्वविद्यालयों, उद्योग और अन्य हितधारकों के बीच साझेदारी। एनईपी 2020 भारत में वर्तमान में उच्च शिक्षा प्रणाली के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए उच्च शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से बदलने और फिर से सक्रिय करने की परिकल्पना करता है और इस तरह समानता और समावेशन के साथ उच्च गुणवत्ता वाली उच्च शिक्षा प्रदान करता है।

कृषि शिक्षा में बदलाव के लिए एनईपी-2020 की परिकल्पना

- एनईपी-2020 कृषि शिक्षा और संबद्ध विषयों के बीच संबंधों को मजबूत करने का आह्वान करता है। अकेले कृषि विश्वविद्यालयों को कृषि पर ध्यान जारी रखते हुए 2030 तक समग्र बहु-विषयक शिक्षा प्रदान करने वाले बहु-विषयक अनुसंधान-गहन संस्थान बनने की आवश्यकता होगी।

- एनईपी-2020 में कहा गया है कि सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि और पशु चिकित्सा विज्ञान में पेशेवरों की तैयारी, मजबूती और विकास को बढ़ाया जाना है।
- एनईपी-2020 में कृषि शिक्षा विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की परिकल्पना की गई है, कृषि शिक्षा की पेशकश से स्थानीय समुदायों को सीधे लाभ होना चाहिए और संस्थागत उत्कृष्टता, अपने स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ाव और जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने की आवश्यकता होगी।
- जैसा कि एनईपी-2020 में परिकल्पना की गई है, प्रत्येक कृषि विश्वविद्यालयों/उच्च कृषि शिक्षा संस्थान को समग्र योजना और स्पष्ट दृष्टि के लिए बोर्ड के सदस्यों, संस्थागत नेताओं, छात्रों और कर्मचारियों की संयुक्त भागीदारी के साथ रणनीतिक संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) तैयार करनी होगी।

एनईपी के तहत विश्वविद्यालयों का पुनर्गठन

1. **संस्थागत पुनर्गठन और समेकन:** बहु-विषयक कृषि विश्वविद्यालय बनाना- उच्च शिक्षा के संबंध में एनईपी-2020 का मुख्य जोर एचईआई को 3,000 या अधिक छात्रों वाले बड़े बहु-विषयक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और एचईआई समूहों/नॉलेज हब में परिवर्तित करके उच्च शिक्षा के विखंडन को समाप्त करना है। कृषि विश्वविद्यालयों को शिक्षण और अनुसंधान-गहन बहु-विषयक संस्थान बनने के लिए विस्तार करने की आवश्यकता होगी।

"संबद्धता प्रणाली" को समाप्त करना - एनईपी के अनुसार, संबद्धता प्रणाली को 2035 तक चरणबद्ध तरीके से समाप्त किया जाना है। यूजी पाठ्यक्रम प्रदान करने वाले कई कॉलेज सार्वजनिक और निजी दोनों डोमेन में बड़ी संख्या में मौजूद हैं। इन्हें उच्च शिक्षा के नये मानदंडों के तहत लाना होगा.

2. कृषि विश्वविद्यालयों में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) बढ़ाने के लिए कदम: एनईपी-2020 में पाया गया है कि यद्यपि कृषि विश्वविद्यालय देश के सभी विश्वविद्यालयों में से लगभग 9% हैं, कृषि और संबद्ध विज्ञान में नामांकन उच्च शिक्षा में कुल नामांकन के 1% से भी कम है। इसने यह भी सिफारिश की कि बेहतर कुशल स्नातकों और तकनीशियनों, नवीन अनुसंधान और प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं से जुड़े बाजार-आधारित विस्तार के माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषि और संबद्ध विषयों की क्षमता और गुणवत्ता दोनों में सुधार किया जाना चाहिए।

3. कृषि शिक्षा का शैक्षणिक पुनर्गठन: एनईपी-2020 ने विकल्पों के साथ एकाधिक प्रवेश और निकास की एक अभिनव प्रणाली के साथ शैक्षणिक कार्यक्रम संरचना में सुधार का प्रस्ताव दिया है। कृषि विश्वविद्यालयों को इस पुनर्गठित चार वर्षीय कार्यक्रम को 2025 तक क्रियाशील बनाने के लिए समय दिया जा सकता है।

आईसीएआर-एयू प्रणाली का अंतर्राष्ट्रीयकरण: भारत में कृषि विज्ञान में विकसित मानव संसाधन और वैज्ञानिक विशेषज्ञता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है। एनईपी भारत और विदेश के संस्थानों के बीच स्थानांतरित होने के इच्छुक छात्रों के लिए संस्थानों में आसान बदलाव/क्रेडिट हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है। एनईपी विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ अनुसंधान और/या शिक्षण सहयोग, विदेशों में गुणवत्तापूर्ण संस्थानों के साथ छात्र विनिमय कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करता है।

4. विद्यार्थी विकास: एनईपी-2020 की सिफारिश के अनुसार, छात्रों को वित्तीय सहायता विभिन्न माध्यमों/उपायों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएगी। आईसीएआर यूजी और पीजी छात्रों के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति (एनटीएस) जैसे विभिन्न छात्रवृत्ति प्रदान करता है; पीजी छात्रों के लिए आईसीएआर पीजी छात्रवृत्ति और पीएचडी के लिए आईसीएआर जेआरएफ/एसआरएफ। छात्र. इसी तरह, कई कृषि विश्वविद्यालय अकादमिक प्रदर्शन करने वालों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। समिति की सिफारिश है

कि पीएचडी करने वाले छात्रों को एनटीएस प्रदान किया जा सकता है। कार्यक्रम और पीएच.डी. को शिक्षण सहायता भी प्रदान की जा सकती है। छात्र.

5. संकाय विकास: एनईपी-2020 मानता है कि एचईआई की सफलता में सबसे महत्वपूर्ण कारक इसके संकाय की गुणवत्ता और संलग्नता है। पोस्ट-डॉक्टोरल फ़ेलोशिप, नेताजी सुभाष इंटरनेशनल फ़ेलोशिप के माध्यम से संकाय को व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करने के लिए विभिन्न पहल; और उन्नत संकाय प्रशिक्षण केंद्रों (सीएएफटी), ग्रीष्मकालीन/शीतकालीन स्कूलों आदि के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए गए हैं।

6. रिसर्च सपोर्ट सिस्टम- नेशनल रिसर्च फाउंडेशन: एनईपी सभी विषयों में प्रतिस्पर्धी अनुसंधान निधि का समर्थन करने और विश्वविद्यालयों में अनुसंधान प्रणालियों को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) के निर्माण के साथ एक मजबूत अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित कर रहा है। समिति की सिफारिश है कि कृषि विश्वविद्यालयों में प्रचलित शिक्षा-अनुसंधान-विस्तार प्रणाली की त्रि-आयामी विशेषता के प्रायोजन और निगरानी की प्रचलित प्रणाली को आईसीएआर के सहयोग से बनाए रखा जाना चाहिए।

7. शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अंकुश लगाना: एनईपी-2020 उच्च शिक्षा के व्यावसायीकरण से निपटने और रोकने के लिए कई तंत्रों की वकालत करता है। सभी शिक्षा संस्थानों को 'लाभ के लिए नहीं' इकाई के रूप में ऑडिट और प्रकटीकरण के समान मानकों के अधीन किया जाएगा। समिति सार्वजनिक संस्थानों को आवंटन की तर्ज पर एनटीए/आईसीएआर द्वारा आयोजित एआईईईए के माध्यम से निजी संस्थानों में छात्रों के आवंटन की सिफारिश करती है। यह संस्थानों को मेधावी छात्रों को आकर्षित करने के लिए प्रतिस्पर्धी माहौल बनाने में सक्षम बनाएगा।

8. विश्वविद्यालयों में शासन और नेतृत्व: एनईपी-2020 स्पष्ट रूप से प्रभावी शासन और नेतृत्व के महत्व को रेखांकित करता है जो उच्च शिक्षा संस्थानों में उत्कृष्टता और नवाचार की संस्कृति के निर्माण को सक्षम बनाता है। समिति बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (बीओजी) की स्थापना की सिफारिश करती है जिसमें सिद्ध क्षमताओं और संस्थान के प्रति प्रतिबद्धता की मजबूत भावना वाले उच्च योग्य, सक्षम और समर्पित व्यक्तियों का एक समूह शामिल हो।

9. ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा: विज्ञान और शिक्षा में हालिया प्रगति के साथ, एनईपी-2020 स्वयं, दीक्षा, स्वयंप्रभा आदि जैसे मौजूदा ई-लर्निंग प्लेटफार्मों को अनुकूलित और विस्तारित करके और कृषि में ई-पाठ्यक्रम विकसित करके प्रौद्योगिकी के लाभों का लाभ उठाने के महत्व को पहचानता है। सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए संबद्ध विज्ञान।